B.A. Part II

Dr. Usha Choud-

Group Formation (समूह निर्माण)

समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि समूह का निर्माण कुछ विशेष कारकों से होता है। ऐसे कारकों में निम्नांकित प्रमुख हैं:-

(i) व्यवहार एवं मनोवृत्ति में समानता (Similarity in behaviour & attitudes)! →

कुछ समाज मनोवैज्ञानिकों जैसे बर्न (Byrne, 1980) क्लोर (Clore, 1977), बैरोन (Baron, 1982) ने अपने-अपने शोधों के आधार पर यह बतलाया है कि जिन व्यक्तियों की मनोवृत्ति में समानता या एकरूपता होती है तो उनके व्यवहारों में भी समरूपता होती है और तब ऐसे लोगों द्वारा आसानी से एक समूह बनाने का निर्णय कर लिया जाता है। जैसे- कक्षा में जिन छात्रों की मनोवृत्ति पढ़ाई के प्रति एक समान होती है, उनका एक समूह का निर्माण जल्द हो जाता है। उस समूह के सभी छात्र लगभग एक समान ढंग से व्यवहार भी करते पाए जाते हैं।

(ii) स्थानिक समीपता (Spatial Proximity)! →

फेस्टिंगर तथा उनके सहयोगियों का मत है कि समूह निर्माण का एक महत्वपूर्ण कारक स्थानिक समीपता होती है। जब व्यक्तियों के बीच स्थानिक समीपता होती है अर्थात् वे एक-ही जगह पर रहते हैं तो उनके बीच अन्तः क्रिया अधिक होती है और

रहे है एक दूसरे को समझने का पर्याप्त मौका मिलता है। इन सबका परिणाम यह होता है कि ऐसे व्यक्ति एक समूह में आसानी से संगठित हो जाते हैं। पास-पड़ोस के लोगों द्वारा विभिन्न तरह के समूह के निर्माण किए जाने का प्रमुख कारण स्थानिक समीपता (Spatial proximity) होती है।

(iii) पूरक आवश्यकताएँ या इच्छाएँ (Complimentary needs or wants) :→

समूह के निर्माण में पूरक आवश्यकताओं की भी भूमिका प्रधान होती है जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों की आवश्यकताएँ एक-दूसरे से भिन्न होती है परन्तु साथ-ही-साथ एक-दूसरे के द्वारा जब इनकी पूर्ति की संभावना होती है तो ऐसे व्यक्तियों के एक समूह का निर्माण आसानी से हो जाता है क्योंकि ऐसे व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं जैसे बेरोन (Baron 1998) तथा क्रच (Crutch, 1981) ने अपने-अपने अध्ययनों के आधार पर यह बतलाया है कि जब किसी व्यक्ति में पोषण की आवश्यकता तथा दूसरे व्यक्ति में निर्भरता की आवश्यकता हो तो ऐसे दोनों व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति काफी आकर्षित होंगे और इनसे एक समूह का निर्माण तेजी से होगा।

(iv) असुरक्षा एवं चिंता का भाव (Feeling of insecurity and anxiety) :→

समूह के निर्माण में असुरक्षा एवं चिंता के भाव की भी प्रधानता होती है जब व्यक्ति में किसी कारण से असुरक्षा एवं तथा चिंता का भाव तीव्र मात्रा में उत्पन्न हो जाती है तो ऐसे लोगों में संबंधन आवश्यकता (need for affiliation) में वृद्धि हो जाती है और तब व्यक्ति दूसरों के साथ अधिक रहने की इच्छा व्यक्त करता है ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति जब अन्य व्यक्ति के साथ होता है तो उसकी

चिन्ता तो घटती ही है साथ-ही-साथ अपनी चिंता के बारे में वह दूसरों को बतलाकर काफी आरामदायक अनुभव करता है तथा उसका मन का बोझ हल्का हो जाता है।

स्कैक्टर (Schachter, 1959) ने इस तथ्य की संपुष्टि एक अध्ययन से किया है। इस प्रयोग में कॉलेज के छात्राओं के दो समूह लिए गए। एक समूह को मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में लाकर इन्हें एक बड़ी Electronic machine दिखलायी गयी और कहा गया कि अभी जो प्रयोग किया जाने वाला है, उसमें एक इस मशीन का उपयोग किया जाएगा जिसके चलाने पर संभव है कि इन्हें बिजली का झटका या आघात (Shock) लग जाए। दूसरे समूह की छात्राओं को सिर्फ मशीन दिखलायी गयी और उसे चलाने की विधि समझा दी गयी। इसके बाद इन दोनों समूहों के छात्रों को एक ऐसे कमरे में इंतजार करने को कहा गया जहाँ इन्हें इस बात की छूट थी कि वे चाहें तो अकेले प्रतीक्षा कर सकती हैं या एक समूह बनाकर भी प्रतीक्षा कर सकती हैं। परिणाम में देखा गया कि पहले समूह की अधिकतर छात्राओं ने समूह बनाकर प्रतीक्षा करना अधिक पसंद किया जबकि दूसरे समूह के छात्राओं में इस तरह की प्रवृत्ति नहीं देखी गयी। स्पष्टतः इसका कारण यह था कि पहले समूह की छात्राओं में संबंधन की आवश्यकता अधिक था क्योंकि इनमें बिजली का संभावित झटका लगने की आशंका के कारण असुरक्षा तथा चिंता का भाव था।

(v) बाहरी धमकी (External threats) :→ व्यक्तिगण उस समय समूह में संगठित हो जाते हैं जब इन्हें किसी व्यक्ति या तत्व से बाहरी खतरा प्राप्त होता है। बाहरी खतरा से बचने के लिए लोगों में आपसी मतभेद-भाव को मिटाकर एक हो जाने की प्रवृत्ति अधिक तीव्र हो जाती है।

(vi) कार्यात्मक एकता (Functional unity) :→

कार्यात्मक एकता के आधार पर भी समूह का निर्माण होता है कार्यात्मक एकता से तात्पर्य व्यक्तियों के बीच किसी कार्य या लक्ष्य प्राप्ति के बारे में सहमति से होता है लेविनथाल (Levinthal, 1988) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बताया है कि जब व्यक्तियों में कार्यात्मक एकता में वृद्धि हो जाती है तो ऐसे लोगों का एक समूह काफी आसानी से विकसित हो जाता है जैसे- यदि मोहल्ला के अधिकतर लोग यदि यह चाहते हैं कि अमुक स्थान में ही मंदिर का निर्माण किया जाए तो ऐसे लोगों का एक समूह बहुत तेजी से विकसित हो जाता है

(vii) अधिक अंतक्रिया (Frequent interaction) :→

समूह निर्माण का एक सामान्य कारण व्यक्तियों के बीच की गयी अंतक्रियाओं की बारंबारता है जब व्यक्तियों के बीच प्रायः अन्तःक्रिया अधिक बार होती है तो इससे उनमें आपस में वार्तालाप अधिक बढ़ जाती है जिसका परिणाम यह होता है कि उनमें आपस में संगठित होने की प्रवृत्ति तीव्र हो जाती है और वे लोग आसानी से एक समूह का निर्माण कर लेते हैं मेयर्स (Myers, 1989) ने अपने अध्ययन के आधार पर इस तथ्य की पुष्टि किया है

(viii) सामाजिक-आर्थिक समानता (Socio-economic equality) :→

जब व्यक्तियों में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर की समानता होती है तो उनके द्वारा एक समूह का निर्माण आसानी से कर लिया जाता है सामाजिक-आर्थिक स्तर में समानता होने से उनमें एक-दूसरे के करीब होने का आकर्षण अधिक बढ़ जाता है

जिसका परिणाम यह होता है कि उनके द्वारा आसानी से एक समूह का निर्माण हो जाता है प्रसिद्ध समाजशास्त्री स्पेंसर एवं इंकेल्स (Spencer & Inkeles, 1979) ने Foundation of Sociology में यह स्पष्ट बताया है कि चाहे सांस्कृतिक आधार कुछ भी क्यों न हो, जब व्यक्तियों में सामाजिक - आर्थिक समानता होती है तो उनके द्वारा आसानी से एक विशेष समूह का निर्माण कर लिया जाता है

निष्कर्ष (Conclusion) :→

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि कई ऐसे कारक हैं जिनसे समूह की निर्माण की प्रक्रिया प्रभावित होता है